17 तुलसी के पद



तुलसीदास
(जन्मः 1532 ई. : निधनः सन् 1623 ई.)

भक्त चूड़ामणि, लोकनायक गोस्वामी तुलसीदास हिंदी के शीर्ष कवि के रूप में ख्यात हैं। आपका जन्मस्थान-राजपुर, जि. बाँदा (उत्तर प्रदेश) माना गया है। आपके पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी था। बाल्यावस्था में आपको माता-पिता का सुख प्राप्त नहीं हुआ। बाबा नरहरिदास ने आपको अपने पास रखा। इन्हीं के साथ गोस्वामीजी ने वर्षों तक काशी, अयोध्या और चित्रकूट में रहकर वेद, वेदांग, इतिहास-पुराण, दर्शन का गहन अध्ययन करके ज्ञान प्राप्त किया। बाबा नरहरिदास ने ही राम-नाम की दीक्षा दी थी। कहते हैं कि पत्नी रत्नावली की भर्त्सना के बाद आप रामभक्ति की ओर उन्मुख हुए। बाद में तो आप राम के परम भक्त बन गए। आपकी रचनाओं का संबंध प्रधान रूप में राम से है। वज्र और अवधी दोनों भाषाओं में आपने काव्य रचे हैं। अपने समय की प्रचलित प्रधान काव्यशैलियों में आपने रामसाहित्य का सृजन किया है। इस नाते तुलसी को अपने समय का प्रतिनिधि कवि भी कहा गया है। 'रामचरित मानस' आपका श्रेष्ठ ग्रंथ है। भारत की जनता में राम को ईश्वर रूप में जो मान्यता प्राप्त है, उसका श्रेय तुलसी को ही दिया जा सकता है। 'रामचरित मानस' को धर्मग्रंथ भी माना जाता है। 'रामचरितमानस', 'विनयपत्रिका', 'कवितावली', 'गीतावली', 'दोहावली', 'श्रीकृष्ण गीतावली', 'बरवै रामायण', 'जानकी मंगल', 'पार्वती मंगल', 'रामाज्ञा प्रश्नावली', 'रामलला नहछू' तथा 'वैराग्यसंदीपनि' आपकी उल्लेखनीय कृतियाँ हैं।

अहं अथवा घमंड जीवन में उत्पन्न होनेवाली अनेकानेक समस्याओं का कारण हुआ करता है। यदि व्यक्ति अपने अहं का नाश कर विनय को धारण कर सके तो वह जीवन में अनेक संकटों से बच सकता है। इन पदों में तुलसीदास ने अपने आराध्य देव राम के प्रति अपनी विनय भावना का प्रदर्शन करते हुए आराध्य को छोड़कर अन्यत्र न जाने का निश्चय व्यक्त किया है। एक भक्त की यह विनय भावना यदि आज के व्यक्ति अपने जीवन में उतार सकें तो संघर्षों की धूप में झुलसते हुए संसार के प्राणों को एक नई चेतना मिल सकती है।

(1)

जाऊँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे।
काको नाम पतितपावन जग, केहि अति दीन पियारे॥
कौने देव बराई बिरदहित हठि-हठि अधम उधारे।
खग, मृग, ब्याध, पषान, बिटप जड़, जवन कवन सुर तारे॥
देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज, सब मायाबिबस बिचारे।
तिनके हाथ दासतुलसी प्रभु, कहा अपनपौ हारे॥

(2)

तू दयालु, दीन हौं, तू दानि, हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पापपुंजहारी॥
नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोसो?
मो समान आरत नहि, आरतिहर तोसो॥
बह्म तू, हौं जीव, तू ठाकुर, हौं चेरो।
तात, मात, गुरु, सखा तू सब बिधि हितु मेरो॥
तोहिं मोहिं नाते अनेक मानिए जो भावै।
ज्यों त्यों तुलसी कृपालु! चरन-सरन पावै॥

('विनयपत्रिका')

शब्दार्थ और टिप्पणी

पतितपावन पापियों का उद्धार करनेवाला ईश्वर **बराई** बड़प्पन, श्रेष्ठता, महिमा **बिरद** बड़ाई **अधम** पापी, दुष्ट, नीच, निकृष्ट **उधारना** उद्धार करना **दनुज** राक्षस, असुर **मुनि** तपस्वी, त्यागी **नाग** सर्प, **मनुज** मनुष्य **अपनपौ** अपनापन **पातकी** पापी **अनाथ** जिसकी रक्षा करनेवाला कोई न हो, अशरणा, असहाय **आरत** दुःखी **चेरो** दास

विशेष-समज

खग : जटायु, रामायण का एक प्रसिद्ध गिद्ध । वह सूर्य के सारथी अरुण का पुत्र था। सीताहरण के समय इसने रावण से युद्ध किया और वह घायल हुआ था। राम का सीताहरण का समाचार देने के बाद प्राण छोड़े।

मृग : मारीच, एक राक्षस जो ताड़का राक्षसी का पुत्र तथा रावण का अनुचर था। वह सुवर्णमृग के रूप में राम द्वारा मारा गया था।

व्याध : वाल्मीकि, पहले हिंसावृत्ति से जीवन यापन करते थे, परंतु बाद में सनकादि ऋषियों के उपदेश से जीवहिंसा छोड़कर तपस्या में लगे और महर्षि वाल्मीकि कहलाए। इन्होंने रामायण की रचना की।

पषान : अहल्या, महर्षि गौतम की पत्नी। शापवश वह पथ्थर बन गई थी। राम के चरणों के स्पर्श से इसका उद्धार हुआ।

बिटप : यमलार्जुन, कुबेर के पुत्र नलकुबेर और मणिग्रीव नारद के शापवश गोकुल में दो अर्जुन वृक्षों के रूप में उत्पन्न हुए। किसी अपराध पर जब यशोदा ने कृष्ण को इन पेड़ों से बाँधा तो वे गिर पड़े और उनका उद्धार हो गया।

स्वाध्याय

1. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) तुलसीदास के मत से कौन पतितपावन हैं ?

(2) भगवान को अति दीन कैसे लगते हैं ?

(3) भगवान ने हठ करके किनका उद्धार किया ?

(4) माया के प्रति विवश होकर कौन-कौन सोचते हैं ?

(5) प्रभु दानी है तो कवि क्या है ?

(6) कवि पाप पुंजहारी किसे कहते हैं ?

2. विस्तार सहित उत्तर लिखिए :

(1) तुलसीदासजी प्रभु के चरणों को छोड़कर कहीं ओर क्यों नहीं जाना चाहते हैं ?

(2) तुलसीदास ने अपने और भगवान के बीच कौन-कौन से संबंध जोड़े है ? क्यों ?

(3) 'तोहि-मोहि नाते अनेक, मानिए जो भावे' का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

3. भावार्थ स्पष्ट कीजिए :

(1) देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज, सब मायाबिबस बिचारे।
तिनके हाथ दासतुलसी प्रभु, कहा अपनपौ हारे॥

(2) नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोंसो?
मो समान आरत नहि, आरतिहर तोसो॥

4. समानार्थी शब्द लिखिए।

अधम, दनुज, मनुज, पातकी, आरत, चेरो

5. शब्दसमूह के लिए एक शब्द दीजिए।

(1) पापियों का उद्धार करनेवाला ईश्वर

(2) जिसकी रक्षा करनेवाला कोई न हो

योग्यता-विस्तार

- काव्यमें दिये गए पत्रों से जुडे प्रसगों की विस्तृत जानकारी प्राप्त कीजिए।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- तुलसीदासजी के जीवन और साहित्य सर्जन के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त कीजिए।
- तुलसीदासजी का चलचित्र में प्रसिद्ध एक पद खोजिए और उसको गाकर कक्षा में सुनाइए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- तुलसीदास के चित्र प्राप्त करके छात्रों से उनके जीवन और कवन के चार्टस तैयार करवाइए।

●